P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

पं० लखमीचन्द के सांगों में निरूपित ब्रह्म दर्शन

कविता
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
एस०आर०एम० विश्वविद्यालय,
सोनीपत

सारांश

वस्तुतः सभी धर्मों का सार रूप ही दर्शन है, क्योंकि इसी में धर्म विशेष का मूल समाहित होता है। वैदिक काल से ही दर्शन का अपना महत्व रहा है। शायद यही वजह है कि दर्शन के बिना साहित्य भी अधूरा ही रहता है। शंकर के दर्शन अनुसार भारतीय दर्शन के निम्न पक्ष माने जाते हैं – गुरु, ब्रह्म, जीव, जगत, माया और मोक्ष। इन्हीं तत्वों के आधार पर हम विवेच्य सांगी पं० लखमीचन्द के सांगों में निरूपित ब्रह्म दर्शन का विश्लेषण किया जायेगा। पं० लखमीचन्द ने दर्शन में गहरी निष्ठा व्यक्त की है। इन्होंने अपनी ब्रह्म सम्बन्धी दार्शनिकता के माध्यम से समाज में व्याप्त अनेकता के बीच एकता का उपदेश दिया है। इनका दर्शन शुष्क, नीरस एवं कलिष्ठ नहीं है, वरन् उनका दर्शन व्यक्ति परिष्कार तथा सामाजिक कल्याण का प्रकारा पुंज है। जिसमें विश्वमैत्र एवं सर्वधर्म समभाव की भावना कूट–कूट कर भरी है।

मुख्य शब्द : संस्कृति, वैदिक काल, नौटंकी, सांग, रागनी

प्रस्तावना

पं० लखमीचन्द ने अपने ब्रह्म विषयक विचारों को किसी वाद से प्रेरित होकर व्यक्त नहीं किये हैं। ये उनके निजी विचार हैं जो हरियाणवीं संस्कृति को भी अपने अन्दर समाहित किये हुये हैं। पं० लखमी जी ने अपने अधिकांश सांगों के माध्यम से ब्रह्म के विभिन्न रूपों को बड़ी ही सटीकता से विवेचित–विश्लेषित करने का सफल प्रयास किया है। विवेच्य सांगी का ब्रह्म निराकार भी है और साकार भी है। वह घर–घर में समाया कबीर का ब्रह्म भी है तो सगुण के रूप में तुलसीदास का भी ब्रह्म है। 'नौटंकी' नामक सांग में कवि फूलसिंह के माध्यम से अवतारी ब्रह्म की अभिव्यंजना करवाते हुये कहलवाते हैं –

जाणा नौटंकी के देश मिलावै शिवजी।।
रक्षा करो हे दुर्गे अम्बे, हे सच्ची ज्वाला जगदम्बे।
जिसके लम्बे–लम्बे केश बढ़ावै शिवजी।।
लखमीचन्द कहै उस भगवन की, सतगुरु देते राम भजन की।
जिनकी सेवा कुरुं हमेशा दर्श दिखावै शिवजी।[1]

इसी प्रकार सांग 'ज्यानी चोर' में लखमी जी संसार के अच्छे–बुरे सभी इंसानों को अन्त में ब्रह्म के घर ही जाना होता है। यथा –

आच्छी बुरी करण आले उस ईश्वर कै सारे जौ
राजा राणी कोढ़ी कंगला सब एक घाट तारे जां।
भले सुरग मैं बुरे नरक मैं पकड़–पकड़ डारे जां।
उड़ लिहाज नहीं कुछ राज नहीं जड़ै गये मोर जी।
सीली छां थी सोवण खातिर न्यूं मन करग्या मेरा।।[2]

इसलिए जीव को घमण्ड छोड़कर सतगुरु अर्थात् प्रभु की शरण में जाना चाहिए। क्योंकि जीव तो यहाँ दास दिन का मेहमान है। इसी सांग में ज्यान मालिन को समझाते हुए इसी ओर संकेत करता हुआ कहता हैं–

या जिन्दगाानी दिन दिस की, फेर कोए बात रहै ना बस की।
तूं बता किसकी छोरी सै री, जीभी की चटोरी सै री।
पलकै सांडणी–सी होरी सै री, मैं बूझूं तेरे गाम नैं।।
कर्या कर राम नाम का भजन, सदा ना रहणा माया–धाना।
लखमीचन्द मरोड़ छोड़ दे, सतगुरु जी कै सामनै।।[3]

सांग 'शाही लकड़हारा' में भी लखमी जी ने परमात्मा को ही सर्वोच्च मानते हुए कहते हैं कि ईश्वर की मर्जी के बिना इंसान कुछ नहीं कर सकता। बीना नामक पात्रा ईश्वर की सर्वज्ञता एवं सर्वव्यापकता के साथ सदकर्मों की महत्ता बताते हुए कहते हैं –

जो मालिक नै बधा दिया वो छोटा ना रहणे का
काट पशु और चतुर आदमी मोटा ना रहणे का।
जड़ै पतिव्रता का धर्म बढ़या रहै उड़ै टोटा ना रहणे का।

लखमीचन्द तू काट लिए तनै
जो कुछ बो राख्या था।
खेत बता दिया काटण खातर
दे दी ज्ञान दराती।।[4]

अर्थात् ईश्वर ही जीव की परीक्षा लेता है। जब जीव परीक्षा में सफल हो जाता है तो परमात्मा उसे सर्वमुख प्रदान कर देता है। 'शाही लकड़हारा' सांग में बीना ईश्वर की दयाशीलता, सर्वज्ञता एवं उसके शक्तिशाली स्वरूप को नन्दानाई सदनकसाई, मीरा आदि के द्वारा विवेचित विश्लेषित करती हुई कहती है –

तेरी कुदरत से सब बन गए काम,
हरे राम, हरे राम, हरे राम।।
बालक से की मेरी माता मरी थी,
बण खण्ड की मनै विपत भरी थी।
जिसी मजदूरी तेरे नां पै करी थी,
है प्रभु वैसे मिल गये दाम।।
थारे गुणों की कब तक करूं बड़ाई,
पार करी तनैं मीरा बाई।
नन्दा नाई और सदन कसाई
तनैं तारे भक्त तमाम।।[5]

इसी सांग में कवि कबीर के समान ही ब्रह्म को एक मानते हुए लिखते हैं –

कहै लखमीचन्द गुरु चरण गहूं,
थारे गुणों नै कब लग लहूं।
ब्रह्मा, विष्णु या शिवजी कहूं,
प्रभु थारे एक सहसर नाम।।[6]

इसी ब्रह्म ने सृष्टि के तीनों गुणों रचना कर प्रकृति में संतुलन स्थापित किया। ब्रह्म ने ही मद, मोह, लोभ, माया, विषय आदि तमोगुणों की रचना की है। इस प्रकार ब्रह्म ही सृष्टि का कर्ता है। उसी ने भूत–प्रेत की संरचना की है। इन्हीं तथ्यों को आरेखित करते हुए पं० लखमीचन्द सांग 'पूरणमल' में कहते हैं –

विष्णु कहण लगे ब्रह्मा से रच क्यूं ढील लगाई।
पूर्ण ज्ञान दिया ईश्वर नै सृष्टि खातिर भाई।।
सृष्टि खारित रजगुण, तमगुण, सतगुण गैल मिलाए।

× × ×

ब्रह्मा जी मै जगह बताकै सृष्टि रचणी टेरी।[7]

श्वेताश्वतरोपनिषद् में लिखा है–

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता।
पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः।।
स वेतिवेधं न च तस्यास्तिवेत्ता।
त माहु ग्रयं पुरुषं महानन्तम्।।[8]

अर्थात् हाथ–पाँव न होने पर भी वह तीव्र वेग से ग्रहण करने वाला है। अंधा होकर भी देखता है। कान नहीं होते हुए भी वह सुन सकता है। वह सब कुछ जानता है, लेकिन उसे कोई भी नहीं जान सकता है। इसी कारण वह महान और पूर्ण है। विवेच्य सांगी पं० लखमीचन्द का ब्रह्म भी उपर्युक्त विशेषताओं से परिपूर्ण है। यथा –

वर्ण नहीं सकते प्रभु तेरी रजा मैं रजा।। टेक।।
हे त्रिलोकी करतार, तनै सब धावै सै संसार।
उनका कर दिया बेड़ा पार,
जिननै हित से भजा।।
तूं सर्वव्यापक गात–गात मैं,
आश्रम वर्ण बेदीन जात मैं।।
सब कुछ तेरे ही हाथ मैं,
चाहे इनाम दे चाहे सजा।।[9]

अर्थात् परमात्मा ही तीनों लोकों का निर्माणकर्ता है। वह सर्वज्ञाता, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्ति सम्पन्न है। उसकी मर्जी के बिना पत्ता तक नहीं हिलता है।

पं० लखमीचन्द की ब्रह्म सम्बन्धी चिन्तन पर अद्वैतवाद का व्यापक प्रभाव नजर आता है, लेकिन इसमें मौलिकता का अभाव नहीं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि लखमीचन्द ने अपने ब्रह्म संबंधी धारणा अपने समाज के अनुरूप बनाकर प्रकट की है। कहीं वे कबीर के निकट जान पड़ते हैं तो कहीं उसका झुकाव सगुण की तरफ हो जाता है। उन्होंने ब्रह्म को त्रिगुणातीत माना है। वह द्वैताद्वैत से विलक्षण है। वह निर्गुण भी है और सगुण–साकार भी है। एक स्थल पर कवि लिखते हैं –

निर्गुण है अलख नाम सरगुण मैं अनन्त हो सै।
निर्गुण सरगुण सम इनके ना आदि
ना अन्त हो सै।। टेक।।
हरि के हजार नाम कृष्ण के करोड़ भाई।
औरां नै बतावै तेरी झूठी है मरोड़ भाई।
उस ईश्वर के नाम गिणाते ये
नुगर्यां के जोड़ भाई।
शेष महेष गणेष विधि तक
कोन्यां पाया ओड़ भाई।
'नेति–नेति' वेद पुकारैं ये
आगम निगम के तन्त हों सैं।।[10]

अर्थात् ब्रह्म निर्गुण भी है और सगुण भी है। हजारों नामों से जाना जाने वाला परमात्मा एक ही है। इसलिए जीव को परमात्मा के नाम पर झगड़ना नहीं चाहिए। लखमी ने अपने ब्रह्म को सगुण–साकार में भी प्रस्तुत किया है। कहीं वह राम के रूप में आता है तो कभी कृष्ण के रूप में। इसके साथ–साथ विवेच्य कवि ने हरियाणवीं देवी–देवताओं में भी विश्वास व्यक्त करते हुए इनको अपने ब्रह्म को सगुण साकार रूप से चित्रित किया है। पं० लखमी माँ भवानी में ब्रह्म को प्रतिबिम्बित करते हुए उसे ही ज्ञानदात्री, मोक्षदायिनी, पालनकत्री सर्वव्यापक मानते हुए लिखते हैं –

तनै रचा दिया जग सारा,
मैया हे, देवी कद हो दर्श तुम्हारा।। टेक।।
तूंही गुण ज्ञान से हिरदा भरैगी,
जणै किस दिन तेरी मेहर फिरैगी।
बेड़ा तूं ही तो करैगी पारा,
नैया हे देवी डोल रही मझधारां।। 1।।
हम तेरी आश करैं सैं निस दिन,
बेड़ा पार करैगी किस दिन।
जिस दिन महिषासुर को मारा,
मैया हे देवी तेरा भक्त कदे ना हारा।। 2।।
एक दिन रावण अपणा बदन छिपा कै,
तनै लेग्या लंका मैं ठा कै।

जाकै कर्‌या लंक मैं घारा, सीते हे देवी तनै असुर हनन कर डारा।। 3।।

द्वापर मैं द्रोपदी हो कै, दुष्ट तेरा दैखें थे सत टोह कै।[11]

एक स्थल पर भवानी माँ को ही जड़, चेतन को पैदा करने वाली मानता है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, तीन लोक, चौदह भवनों में, रज, जन्म, मरण आदि में माँ भवानी का ही अंश है। यथा –

जड़ चेतन मैं व्यापक है,
तू ही मूल फूल डाली माता।
पांच तत्व गुण तीन शरीर मैं,
तूही बाग तूही माली माता।। टेक।।
तेरिए शक्ति शिव ब्रह्मा विष्णु मैं,
तीन लोक और चौदह भवन मैं।।
वृद्ध तरुण और जन्म मरण मैं,
तेरी ज्योत निराली री माता।
आत्मा बीच निवास करै, रही कोए
जगह ना खाली री माता।।[12]

इसी तरह लखमीचन्द का ब्रह्म भी अकथ, अलख एवं सर्वशक्तिमान है। वह जड़ चेतन में व्याप्त है। वही जीव का साथी है। वही उसका शत्रु भी है। वही सीता, सावित्री, ब्रह्मा, विष्णु, पहाड़, फूल, वृक्ष, हाड़–मांस है। ब्रह्म ही इस संसार का नूर है। यथा –

तू ही अलख और तू ही अनादि तू ही,
ब्रह्म और तू ही माया।
तू सीता शक्ति सावित्री
तू ही घट घट मैं दर्शाया4।
तू ही पहाड़ तू ही समन्दर
तू ही वृक्ष और तू ही छाया।
तू ही हाड–मांस और सांस–सांस
मैं जहाँ देख्या वहीं पाया।
तुम लखमीचन्द पर भी दया करो
अर्ज थारा दास करै है।।[13]

ऋग्वेद ने भी सिद्ध किया है कि सम्पूर्ण विश्व ब्रह्म का ही प्रतिबिम्ब रूप है और भूत, भविष्य वर्तमान उसी के अभिन्न अंग हैं। यथा –

पुरुष एवेदं सर्व यद्भूतं यच्च भव्यम।[14]

इन्हीं विशेषताओं से पूर्ण पं० लखमीचन्द का ब्रह्म है। उन्होंने भी ब्रह्म को सर्वशक्तिशाली सिद्ध किया है। लखमीचन्द अपने ब्रह्म को बाजीगर के रूप में चित्रित करते हुए लिखता है –

उस बाजीगर नै मन्त्र पढ़
एक ऐसा खेल रचाया जी।
जल पै थल और थल पै
सृष्टि अद्‌भुत उसकी माया जी।
उस बाजीगर नै मन्त्र पढ़ एक
ऐसा बिरवा लाया जी।
उस बिरवे मैं बास करै
और रग–रग बीच समाया जी,
वायु से अग्नि तेज जल है
इतना इलम अकेले मैं।। 1।।
उस बाजीगर नै मन्त्र पढ़ एक
ऐसी माया फेर दई।
मखबर कूख बणा शक्ति
सबके अन्दर ढेर दई।
तीन लोक और चौदह भवन
मैं अपणी सृष्टि बखेर दई।[15]

अर्थात् बाजीगर रूपी ब्रह्म ने ही अपने जादू से इस संसार को बनाया है। उसने ही माया, मोह, वासना तीन लोक, चौदह भवनों का निर्माण किया है। प्रकृति के जड़–चेतन में वही समाया हुआ है।

हरियाणा के प्रसिद्ध सांगी पं० लखमीचन्द का स्थान हरियाणवी साहित्य में सर्वोपरि है। पूरे विश्व का संचालन ब्रह्म द्वारा ही होता है। इसलिए जीव को हमेशा प्रभु भजन में ध्यान लगाना चाहिए, ताकि उसके अन्तःकरण की शुद्धि के साथ–साथ अगला जन्म भी सुधर सके। पं० लखमीचन्द ने अपने ब्रह्म सम्बन्धी दर्शन द्वारा सर्वधर्म समभाव का ही संदेश दिया है। यद्यपि उनकी ब्रह्म संबंधी मान्यताएँ शास्त्रीय कसौटी पर खरी नहीं उतरती। यह उनका लक्ष्य भी नहीं रहा। उनका लक्ष्य तो मानव एवं समाज रहा है। इसलिए मानव समाज को सही राह पर चलाने हेतु कवि ने ऐसे ब्रह्म की संरचना की है जो अपनी शक्ति से नाश एवं निर्माण कर सकता है। मोक्ष नरक भी इसी के अधीन है। राजा को रंक और रंक को राजा बनाने का सामर्थ्य भी तुझमें है। यथा –

हे ईश्वर तू सबके बिगड़े हुए समारै काम।
हरे राम, हरे राम, हरे राम।। टेक।।
भली जगांह पै नाश घालदे,
मुर्दे मैं भी सांस घालदे।
राजा नै बणवास घालदे, उटादे कष्ट तमाम।
हरे राम, हरे राम, हरे राम।। 1।।
बुद्धि नै तू बणा अस्थिर दे, दुख सुख की बात खबर दे।
एक पल छन मैं करदे, तू प्रभु गोरा काला चाम।
हरे राम, हरे राम, हरे राम।। 2।।
माया रचकै तू खेल खिलादे, दुख सुख दे कै तुरन्त भुलादे।[16]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते है कि पं० लखमीचन्द उस अलख, निर्गुण, घर–घर व्यापी व सर्वशक्तिमान की बात करते हैं, जो रूप भी रखता है और रूप से भी परे है। यहाँ एक बात पर विशेष ध्यान देने कि आवश्यकता है कि विवेचन सांगी का ब्रह्म संबंधी दर्शन मानव कल्याण एवं सर्वधर्म समभाव में गहरी निष्ठा रखता है। यही सर्वधर्म समभाव की भावना समाज में फैले। ईश्वरवाद को खत्म कर सकती है। लखमी का ब्रह्मा तीनों लोकों की निर्माणकर्ता है, लेकिन फिर भी उसके आदि और अंत का पता नहीं है। सम्पूर्ण संसार उसी के आदेशानुसार चल रहा है। इस प्रकार लखमीचन्द ने अपने ब्रह्म विचारों से व्यक्ति–व्यक्ति में एकता का भाव जगाया।

सन्दर्भ सूची

1. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 113*
2. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 146*
3. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 148*

4. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 202*
5. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 224*
6. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 224*
7. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 449*
8. *श्वेताश्वतरोपनिषद् 3/3/19*
9. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 722*
10. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 734*
11. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 720*
12. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 720*
13. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 786*
14. *ऋग्वेद, 10/90/2*
15. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 737*
16. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 722*